की चौखट पर खड़ा होता है तथा सामाजिक प्राणी कहलाने लगता है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति, विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति एवं ज्ञानार्जन वह भाषा पर ही निर्भर करता है तथा जीवन के बहुआयामीय विकास और प्रगति के दौड़ में सम्मिलित होने, ज्ञान विज्ञानमय नवीन तकनीक प्रधान युग में जीने हेतु भाषा मानव के विकसित स्वरूप से साक्षात्कार करता है। इसने ही मानव को गहन अज्ञान अन्धकार में से ~~बचाया~~ बचा लिया तथा मानव की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विरासत को न केवल संरक्षित किया वरन् उसमें सम्वर्द्धन हेतु मनुष्य को उत्प्रेरित भी किया। निःसंदेह मानव सभ्यता के विकास में भाषा सबसे बड़ी शक्ति है। भाषा से मनुष्य मन के भाव प्रकट करता है। संगीत रचना, गीत, साहित्य, सृजन आदि सभी भाषा के आविष्कार के ही कारण है। भाषा से ही क्षेत्र, प्रान्त और गण्ड से सम्बन्ध स्थापित होती है। भारत में अनेक प्रकार के भाषाएँ प्रचलित हैं।

भाषा का महत्व
Importance of Language

आज के समय में भाषा का मानवजीवन में इतना अधिक महत्व है कि भाषा को मानवीय विकास का पर्याय माना जाता है। मानव जीवन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास एवं ज्ञानार्जन के लिए भाषा पर निर्भर रहता है। यह कहा जा सकता है कि समस्त मानवीय गुणों का विकास भाषा के द्वारा ही होता है। आज हमारे समाज, ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों का विकास, आध्यात्मिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक उत्थान के मूल में भाषा की शक्ति विद्यमान है। भाषा के महत्व को सभी देशों और कालों में स्वीकार किया जाता है। ऋग्वेद का ऋषि-समुदाय भी भाषा के महत्व को शक्ति की प्रभुता के साथ स्वीकार करता है अर्थात् भाषा को दैवी शक्ति का वरदान प्राप्त है।

Scanned by TapScanner

आचार्य हरदी ने भी माना है कि यदि शब्दरूपी ज्योति संसार में प्रकाशित न होती तो यह समस्त त्रैलोक्य गहन अन्धकार में डूब जाता। भाषा का महत्व इस प्रकार देखा जा सकता है –

Scanned by TapScanner